C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय : हिंदी 'अ'

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।

4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।

5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।

6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड-क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×4=8) [10]

हड़प्पा में पकी मिट्टी की स्त्री मूर्तिकाएँ भारी संख्या में मिली हैं। एकमूर्ति में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है। विद्वानों के मत में यह पृथ्वी देवी की प्रतिमा है और इसका निकट संबंध पौधों के जन्म और वृद्धि से रहा होगा। इसलिए मालूम होता है कि यहाँ के लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और इसकी पूजा उसी तरह करते थे जिस तरह मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस् की। लेकिन प्राचीन मिस्र की तरह यहाँ का समाज भी मातृ प्रधान था कि नहीं यह कहना मुश्किल है। कुछ वैदिक सूक्तों में पृथ्वी माता की स्तुति है, धोलावीरा के दुर्ग में एक कुआँ मिला है इसमें नीचे की तरफ जाती सीढ़ियाँ है और उसमें एक खिड़की थी जहाँ दीपक जलाने के सबूत

मिलते है। उस कुएँ में सरस्वती नदी का पानी आता था, तो शायद सिंधु घाटी के लोग उस कुएँ के जरिए सरस्वती की पूजा करते थे।

1. हड़प्पा में किसकी मूर्तिकाएँ भारी संख्या में मिली हैं?

   उत्तर : हड़प्पा में पकी मिट्टी की स्त्री मूर्तिकाएँ भारी संख्या में मिली हैं।

2. हड़प्पा के लोग किसे उर्वरता की देवी समझते थे?

   उत्तर : हड़प्पा के लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे।

3. हड़प्पा के लोग धरती की पूजा कैसे करते थे?

   उत्तर : हड़प्पा के लोग धरती की पूजा उसी तरह करते थे जिस तरह मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस् की।

4. वैदिक सूक्तों में किस की स्तुति है?

   उत्तर : कुछ वैदिक सूक्तों में पृथ्वी माता की स्तुति है।

5. सिंधु घाटी के लोग सरस्वती की पूजा की पूजा कैसे करते थे?

   उत्तर : धोलावीरा के दुर्ग में एक कुआँ मिला है इसमें नीचे की तरफ जाती सीढ़ियाँ है और उसमें एक खिड़की थी जहाँ दीपक जलाने के सबूत मिलते है। उस कुएँ में सरस्वती नदी का पानी आता था, तो शायद सिंधु घाटी के लोग उस कुएँ के जरिये सरस्वती की पूजा करते थे।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'हड़प्पा' है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र.2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=[4]

1. बारिश होने पर फूल खिलते हैं। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

   उत्तर : जब बारिश होती है, तब फूल खिलते हैं।

2. मैंने उसकी बहुत प्रतीक्षा की, किन्तु वह नहीं आया। (रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।)

   उत्तर : संयुक्त वाक्य

3. वह प्रतिदिन घर का कार्य करने के बाद भी समय पर कार्यालय पहुँचती है। (रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।)

   उत्तर : सरल वाक्य

4. मेरे कमरे में एक पुरानी घडी है। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

   उत्तर : मेरे कमरे में जो घडी है, वह पुरानी है।

प्र. 3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=[4]

1. यश <u>बहुत</u> शरारती लड़का है।

   उत्तर : बहुत - प्रविशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक, शरारती का विशेषण

2. देव <u>और</u> देवांगी भाई-बहन हैं।

   उत्तर : और - समुच्चयबोधक अव्यय, समाधिकरण योजक

3. चोट <u>के कारण</u> राघव खड़ा भी नहीं हो पा रहा।

   उत्तर : के कारण - संबंधबोधक अव्यय, कारण सूचक, 'चोट' का संबंध अन्य शब्द से जोड़ता है।

4. राजू ने <u>उसे</u> बहुत मारा।

उत्तर : उसे - पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्मकारक, ‘मारा’ क्रिया का कर्म

प्र. 4. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए: 1x4=[4]

1. लड़के चित्रकारी कर हैं। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

   उत्तर : लड़कों द्वारा चित्रकारी की जा रही है।

2. लड़कों द्वारा पतंग उड़ाई जा रही है। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)

   उत्तर : लड़के पतंग उड़ा रहे हैं।

3. आओ, आज तालाब में तैर लें। (भाववाच्य में बदलिए।)

   उत्तर : आओ, तालाब में तैरा जाए।

4. राघव आँगन में सोता है। (भाववाच्य में बदलिए।)

   उत्तर : राघव द्वारा आँगन में सोया जाता है।

प्र.5. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए: 1x4=[4]

1. दुःख ही जीवन की कथा रही
   क्या कहूँ आज जो नही कही।

   उत्तर : करुण रस

2. अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा,
   यह मत लछिमन के मन भावा।
   संधानेहु प्रभु बिसिख कराला,
   उठि ऊदथी उर अंतर ज्वाला।

   उत्तर : रौद्र रस

3. चमक उठी सन सत्तावन में वो तलवार पुरानी थी,
बुंदेलों हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी।
उत्तर : वीर रस

4. लंका की सेना कपि के गर्जन रव से काँप गई,
हनुमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भांप गई।
उत्तर : भयानक रस

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र.6. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+2=[6]

यों खेलने को हमारे भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना जरुर था कि उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं। बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत ‘पडोस-कल्चर’ से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरम्भिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुजार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था।

1. लेखिका ने अपने भाइयों के साथ कौन-से खेल खेले थे?

   उत्तर : भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा, पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया।

2. लेखिका को आज क्या महसूस होता है?

   उत्तर : लेखिका को आज बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत 'पडोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

3. लेखिका के कहानियों के पात्र कहाँ से हैं?

   उत्तर : लेखिका के आरंभिक कहानियों के पात्र उनके अपने मोहल्ले के ही हैं जहाँ वे बचपन में रहती थी।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

   उत्तर : लेखक के अचानक डिब्बे में कूद पड़ने से नवाब-साहब की आँखों में एकांत चिंतन में खलल पड़ जाने का असंतोष दिखाई दिया। ट्रेन में लेखक के साथ बात-चीत करने के लिए नवाब साहब ने कोई उत्साह नहीं प्रकट किया। लेखक से कोई बातचीत भी नहीं की और न ही उनकी तरफ देखा। इससे लेखक को स्वयं के प्रति नवाब साहब की उदासीनता का आभास हुआ।

2. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

   उत्तर : बेटे की मृत्यु पर भगत ने पुत्र के शरीर को एक चटाई पर लिटा दिया, उसे सफेद चादर से ढक दिया तथा वे कबीर के भक्ति गीत

गाकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। उनके अनुसार आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहनि अपने प्रेमी से जा मिली। उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकता। इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया।

3. बिस्मिल्ला खाँ के जीवन में कुछ ऐसे व्यक्ति और कुछ ऐसी घटनाएँ थीं जिन्होंने उनकी संगीत साधना को प्रेरित किया।

उत्तर :

- बिस्मिल्ला खाँ जब सिर्फ़ चार साल के थे तब छुपकर अपने नाना को शहनाई बजाते हुए सुनते थे। रियाज़ के बाद जब उनके नाना उठकर चले जाते थे तब अपनी नाना वाली शहनाई ढूँढते थे और उन्हीं की तरह शहनाई बजाना चाहते थे।
- बचपन में वे बालाजी मंदिर पर रोज़ शहनाई बजाते थे। इससे शहनाई बजाने की उनकी कला दिन-प्रतिदिन निखरने लगी।
- बालाजी मंदिर तक जाने का रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से होकर जाता था। इस रास्ते से कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा की आवाज़ें आती थी। इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर इन्हें प्रेरणा मिली।
- बिस्मिल्ला खाँ जब कुलसुम हलवाइन की दुकान पर जाते तो वहाँ जब कुलसुम कलकलाते घी में कचौड़ी डालती तो उस समय छन्न की आवाज़ आती। उस अवाज़ में भी उन्हें सारे आरोह-अवरोह दिख जाते।

4. मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के बारे में क्या कहा है?

उत्तर : लेखिका की माँ धैर्य और सहनशक्ति में धरती से कुछ ज्यादा थी। इन्होंने कभी अपने पति और बच्चों के समक्ष आवाज नहीं उठाई। सदा पिता के कोप का भाजन रहीं। गलती न होने पर भी उनके

व्यवहार की कठोरता को झेलती और चुप रहती। उनके लिए घर तथा परिवार ही सबकुछ था। स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं था। इसलिए वह लेखिका के लिए कभी आदर्श पात्र नहीं रही।

5. कस्बे का वर्णन कीजिए।

उत्तर : कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका थी।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+2=[6]

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

1. अंतरे की जटिल तानों का जंगल किसे कहा गया है?

उत्तर : इसका अर्थ है- किसी गीत के चरण को गाते हुए उसके स्वरों और आलापों की बहुत कठिन और उलझी हुई तानें।

2. इस कविता की भाषा कौन-सी है?

उत्तर : इस कविता की भाषा खड़ी बोली हिंदी है।

3. सरगम को लाँघने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : सरगम को लाँघने का तात्पर्य है- गीत के मुख्य स्वर की मर्यादा को भूलकर और अधिक कठिन आलापों में खो जाना या स्वर को अधिक ऊँचे उठा देना।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर : परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए-

- बचपन में तो हमने कितने ही धनुष तोड़ दिए परन्तु आपने कभी क्रोध नहीं किया इस धनुष से आपको विशेष लगाव क्यों हैं?
- हमें तो यह असाधारण शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा।
- श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वतः टूट गया।
- इस धनुष को तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा था। इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलना था?

2. संगतकार की आवाज़ में एक हिचक-सी क्यों प्रतीत होती है?

उत्तर : संगतकार जब मुख्य गायक के पीछे-पीछे गाता है वह अपनी आवाज़ को मुख्य गायक की आवाज़ से अधिक ऊँचें स्वर में नहीं जाने देते ताकि मुख्य गायक की महत्ता कम न हो जाए। यही हिचक (संकोच) उसके गायन में झलक जाती है। वह कितना भी उत्तम हो परन्तु स्वयं को मुख्य गायक से कम ही रखता है। लेखक आगे कहता है

कि यह उसकी असफलता का प्रमाण नहीं अपितु उसकी मनुष्यता का प्रमाण है कि वह शक्ति और प्रतिभा के रहते हुए स्वयं को ऊँचा नहीं उठाता, बल्कि अपने गुरु और स्वामी को महत्त्व देने की कोशिश करता है।

3. कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

उत्तर : कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादलों में भीषण गति होती है उसी से वह संसार के ताप हरता है। कवि ऐसी ही गति, ऐसी ही भावना और शक्ति चाहता है। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भर देता है। इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

4. 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है क्योंकिं इसमें अतृप्ति के सिवाय कुछ नहीं मिलता। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। उन्हें छूकर याद करने से मन में दुख बढ़ जाता है। दुविधाग्रस्त मन:स्थिति व समयानुकूल आचरण न करने से भी जीवन में दुख आ सकता है। व्यक्ति प्रभुता या बड़प्पन में उलझकर स्वयं को दुखी करता है।

5. कवि किसकी और कैसी मुस्कान का वर्णन कर रहा है और कवि उससे प्रभावित क्यों हैं?

उत्तर : कवि यहाँ पर अपने नन्हें शिशु की भोली और मनमोहक मुस्कान का वर्णन कर रहे हैं।

शिशु की मुस्कान इतनी आकर्षक है कि वह मृतक में भी जान डाल देती है। मुस्कुराते समय शिशु के छोटे दाँत ऐसे लगते हैं मानो कवि की झोपड़ी में कमल खिल उठे हो। इस प्रकार कवि अपने शिशु की भोली, आकर्षक और मनमोहक मुस्कान की स्वाभाविकता से प्रभावित है।

प्र.10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। 3×2=[6]

1. जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

   उत्तर : नार्गे एक कुशल गाइड था। वह अपने पेशे के प्रति पूरा समर्पित था। उसे सिक्किम के हर कोने के विषय में भरपूर जानकारी प्राप्त थी इसलिए वह एक अच्छा गाइड था।

   एक कुशल गाइड में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है-

   - एक गाइड अपने देश व इलाके के कोने-कोने से भली भाँति परिचित होता है, अर्थात् उसे संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
   - उसे वहाँ की भौगोलिक स्थिति, जलवायु व इतिहास की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
   - एक कुशल गाइड को अपनी विश्वसनीयता का विश्वास अपने भ्रमणकर्ता को दिलाना आवश्यक है। तभी वह एक आत्मीय रिश्ता कायम कर अपने कार्य को कर सकता है।
   - एक कुशल गाइड को चाहिए कि वो अपने भ्रमणकर्ता के हर प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो।
   - गाइड को कुशल व बुद्धिमान व्यक्ति होना आवश्यक है। ताकि समय पड़ने पर वह विषम परिस्थितियों का सामना अपनी

कुशलता व बुद्धिमानी से कर सके व अपने भ्रमणकर्ता की सुरक्षा कर सके।

- गाइड को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भ्रमणकर्ता की रूचि पूरी यात्रा में बनी रहे ताकि भ्रमणकर्ता के भ्रमण करने का प्रयोजन सफल हो। इसके लिए उसे हर उस छोटे बड़े प्राकृतिक रहस्यों व बातों का ज्ञान हो जो यात्रा को रूचिपूर्ण बनाए।
- एक कुशल गाइड की वाणी को प्रभावशाली होना आवश्यक है इससे पूरी यात्रा प्रभावशाली बनती है और भ्रमणकर्ता की यात्रा में रूचि भी बनी रहती है।

2. साँप को देखते ही भोलानाथ और उसके साथियों ने क्या किया? या साँप से डरकर बच्चे कैसे भागे?

उत्तर : एक बार टीले पर जाकर भोलानाथ और उसके साथी चूहों के बिल में पानी डालने लगे। उससे चूहा तो नहीं निकला पर साँप निकल आया। साँप को देखकर सभी बच्चे डर गए। बच्चे रोते चिल्लाते बेहताशा भागने लगे। कोई औंधा गिरा, कोई अंटचिट किसी का सिर फूटा, किसी के दाँत टूटे, सभी गिरते पड़ते भागे। भोलानाथ की सारी देह लहूलुहान हो गई थी। पैरों के तलवे काँटों से छलनी हो गए थे। वे एक ही सुर में दौड़ते हुए घर के बितर पहुँचकर आपनी माता की गोद में शरण ले लेते हैं।

3. जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है।

उत्तर : ज़ार्ज पंचम इंग्लैण्ड का राजा था जिसने भारतीय स्वतंत्रता-संग्रामियों पर बहुत ज़ुल्म ढाए थे। उसकी लाट की नाक टूट गई

थी। बहुत ढूँढने पर भी किसी भारतीय महापुरूष या स्वतंत्रता सेनानी की नाक फिट न बैठ सकी। यहाँ लेखक ने भारतीय समाज के महान नेताओं व साहसी बालकों के प्रति अपना प्रेम प्रस्तुत किया है। सभी भारतीय जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपने बलिदान दिए, चाहे वह बूढा हो या जवान हो या फिर बच्चा ही क्यों न हो, उनकी मान-मर्यादा और इज्ज़त के समक्ष ज़ार्ज पंचम या उसके समतुल्य किसी अन्य की कोई इज्ज़त नहीं। इसलिए इनकी नाक जॉर्ज पंचम की नाक से सहस्त्रों गुणा ऊँची है।

खंड - घ

[लेखन]

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए: [10]

संयुक्त परिवार

बड़े-बुजर्गों के साथ कई रिश्तों का एक माला में पिरोया हुआ परिवार ही संयुक्त परिवार कहलाता है। संयुक्त परिवार से संयुक्त उर्जा का जन्म होता है। संयुक्त उर्जा दुखों को खत्म करती है। संयुक्त परिवार हमारी सामाजिक व्यवस्था का मूल आधार है पहले खेती प्रधान समाज था। हर परिवार में ज्यादा से ज्यादा लोगों की जरूरत पड़ती थी। यही कारण था कि एक ही चूल्हा हुआ करता था। सब लोग एक ही रसोई का पका हुआ भोजन खाते और मिलकर खेती करते थे। सेहत-चिकित्सा का विकास नहीं हुआ था। मृत्यु दर अधिक थी। यही कारण था कि परिवार को बड़ा रखने की सोच ज्यादा प्रबल थी। समाज के साथ-साथ मानव की सोच में बदलाव आया। जन्म दर बढ़ी और स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ बढ़ने लगी। मृत्यु दर कम हुई और रोजगार के साधन बड़े। जिस कारण बड़े परिवार का लालन-पालन करना कठिन होने लगा। खेती के सीमित होने से छोटे परिवारों की धारणा बढ़ने लगी। लेकिन आज के

प्रतिस्पर्धा भरे युग में जहाँ हर व्यक्ति अपने को दूसरे से बेहतर साबित करने के होड़ में जुटा है, कम उम्र एवं कम समय मे ज्यादा कामयाबी, ऊँचा पद तथा आमदनी हासिल करने के जूनून में व्यक्ति परिवार से दूर होते जा रहा है। बदलती जीवनशैली और प्रतिस्पर्धा के दौर में तनाव तथा अन्य मानसिक समस्याओं से निपटने में अपनों का साथ अहम भूमिका निभा सकता है। संयुक्त परिवार में सभी सदस्य एक दूसरे के आचार व्यवहार पर निरंतर निगरानी बनाय रखते हैं, किसी की अवांछनीय गतिविधि पर अंकुश लगा रहता है, अर्थात प्रत्येक सदस्य चरित्रवान बना रहता है। किसी समस्या के समय सभी परिजन उसका साथ देते हैं। इसलिए आज फिर से संयुक्त परिवारों को अपनाया जा रहा है। इसका एक कारण नारियों का कामकाजी होना भी है आज लगभग हर एक घर में नारी कामकाजी है ऐसे में बच्चों की सुरक्षा एक अहम् मुद्दा माता-पिता के सामने उभरकर आता है और ये तो सर्वविदित सत्य है कि दादा-दादी या नाना-नानी या घर बड़े बुजर्गों से बढ़िया लालन-पालन और कोई नहीं कर सकता है। आज जहाँ हर दिन बच्चों से जुड़ी अप्रिय घटनाएँ सुनने को मिल जाती है ऐसे समय में घर के बड़े-बुजर्गों का ही आसरा बचता है केवल सुरक्षा की ही बात नहीं है परंतु बच्चों के बढ़ते अहम् वर्षों में उसे ज्यादा सुना जाना, उसकी जिज्ञासा का सही उत्तर देना और हर समय किसी न किसी की उपलब्धता अति आवश्यक होती है और वर्तमान परिवेश में घर के बड़े बुजर्गों के अलावा माता-पिता के पास इतना समय नहीं होता है इसलिए आज संयुक्त परिवार हर घर की जरुरत बन गए है। वैसे भी अधिकतर अकेले और एकाकी परिवार के बच्चे हिंसक, झगड़ालू और कुंठित हो जाते हैं। कामकाजी माता-पिता के बच्चों में कई विकृतियों से पूरा विश्व चिंतित है। आज के बच्चे कल का भविष्य हैं। आदर्श नागरिक बन कर वे देश के संचालक होंगे। यदि बच्चों को अच्छी परवरिश और संस्कार नहीं मिलेंगे तो वे आगे चलकर न ही अपना विकास कर पायेंगे और न ही परिवार का और न

ही वे देश के विकास में सकारात्मक सहयोग दे सकेंगे। बच्चे संयुक्त परिवार में दादा-दादी, काका-काकी, बुआ आदि के प्यार की छाँव में खेलते-कूदते और संस्कारों को सीखते हुए बड़े होते हैं। आज फिर से संयुक्त परिवार की भावना को स्वीकार किया जा रहा है। हर कोई चाहता है कि उनका परिवार सुखी और खुशहाल हो।

शारीरिक शिक्षा और योग

स्वास्थ्य मानव का अमूल्य धन है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। मनुष्य के जीवन में आरंभ से ही शारीरिक शिक्षा और योग का महत्त्व रहा है।

शारीरिक शिक्षा जहाँ एक ओर हमारे शरीर से संबंधित होती है वही योग तन और मन दोनों से समान रूप में जुड़ा है। शारीरिक शिक्षा हमारे तन को स्वस्थ रखने में कारगर है, उससे शारीरिक सुंदरता भी बढ़ती है। तो योग स्वास्थ्य, बाह्य सौंदर्य, आंतरिक सौंदर्य, और आध्यात्मिक से भी हमारा परिचय करवाता है।

शारीरिक शिक्षा और योग को यदि आपस में जोड़ दिया जाए तो परिणाम बड़ा सुखद होगा। इन दोनों के साथ मानव का शारीरिक और मानसिक अर्थात् सर्वांगीण विकास होगा। वैसे भी एक प्रगतिशील समाज के लिए उसके नागरिकों का न केवल शारीरिक रूप से सक्षम होना ही जरुरी नहीं है बल्कि वह मानसिक रूप से भी स्वस्थ और सबल होना चाहिए। जिससे वह जीवन की हर चुनौतियों का सामना कर सके और एक स्वस्थ और सुन्दर राष्ट्र का निर्माण करने में अपनी भागीदारी दे सके।

प्र. 12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

अपने मुहल्ले में बढ़ती गंदगी के बारे में शिकायत करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को 80 से 100 शब्दों में पत्र लिखिए:

संगीता खरे

45, शिवनेरी

शाहूनगर, खासबाग मैदान

कोल्हापुर

दिनाँक: 10 जुलाई 20xx

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी

नगर परिषद

कोल्हापुर

विषय : मुहल्ले में बढ़ती गंदगी के बारे में शिकायती पत्र।

माननीय महोदय,

सविनय निवेदन है कि पिछले एक सप्ताह से हमारे मोहल्ले में कूड़ा उठाने वाली गाड़ी नहीं आई है, जिसके कारण सर्वत्र कूड़े के ढेर फैले हुए हैं। भयंकर गंदगी चारों ओर फैली हुई है और दुर्गन्ध के मारे साँस लेना भी दूभर होगया है, साथ ही मच्छरों का प्रकोप भी बढ़ गया है। बरसात के कारण तो स्थिति और भी बुरी हो गई है सारा कूड़ा सड़क तक फ़ैल चूका है।

अतः आपसे निवेदन है कि जितनी जल्दी हो सके हमें इस गंदगी से छुटकारा दिलाएँ।

धन्यवाद

भवदीय

संगीता खरे

अथवा

परीक्षा में असफल होने पर मित्र को 80 से 100 शब्दों में सांत्वना पत्र लिखिए।

नरेश शर्मा

12-बी, जवाहर नगर

दिल्ली- 110007

प्रिय सागर

नमस्ते

तुम्हारा पत्र मिला। पत्र पढ़कर बहुत दुख हुआ, मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था कि तुम जैसा मेधावी छात्र कभी परीक्षा में असफल होगा।

अब अफ़सोस करने से अच्छा है कि तुम अधिक परिश्रम करो। बीते समय पर पछताना व्यर्थ है। ठोकर पाकर ही मनुष्य सभँलता है। असफलता से ही सफलता की ओर बढ़ता है। अपनी दिनचर्या में पढ़ाई का समय बढ़ाओ तथा पढ़ने में मन लगाओ। वार्षिक परीक्षा के लिए समय-सारिणी बनाकर हर विषय पर उचित ध्यान दो।

मुझे आशा है कि तुम बहुत अच्छे अंक प्राप्त कर सकोगे।

तुम्हारा मित्र

आशीष

प्र. 13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25 से 30 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। [5]

1. मोबाइल के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए :

टी 20 मोबाइल

आज की तकनीक की ,

आज की युवा पीढ़ी की माँग ,

है टी 20 मोबाइल

2. सोन पापड़ी का विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए:

सुहानी सोन पापड़ी

जब मीठे की सताए याद

सुहानी सोन पापड़ी की जागे चाह